गीता भगवान वाणी

वही तो दर्शन था और तुम तो ठहर के बैठता है कृष्ण भगवान आएगा, पीछे मेरे को आ के दर्शन कराएगा। कब आएगा तुम्हारा कृष्ण भगवान? तुम्हीं नहीं होएगा, जब भगवान आएगा। तुम ठहर के बैठा है कि भगवान आएगा मेरे को दर्शन कराएगा, मैंने तो भई विराट स्वरूप देखा ही नहीं है, जैसा अर्जुन ने देखा था। भगवान कितना बड़ा हो गया लडाई के मैदान में। कितना बड़ा विराट स्वरूप दिखाया! भई हमको ऐसा कहा है हमने तो नहीं देखा है। तुम अभी क्या देख रहा है? अभी जो मुख से निकल रही है वाणी, भई इधर भी मैं हूँ, यहाँ भी मैं हूँ, वहाँ भी मैं हूँ, सब जगह भगवान ही भगवान है। है ही भगवान तो यही तो भगवान का यह विष्व रूप दर्शन था जो अर्जुन को मिला। अर्जुन ने बोला - एक 100 सूरज से भी ज्यासती रोशनी भगवान मैंने अंदर में देखी, अर्जुन के अंदर में ज्ञान की रोशनी आ गई नहीं तो 100 सूरज बाहर निकलें तो भी तुम्हारा अज्ञान नहीं जाएगा, लेकिन गुरु के ज्ञान से 100 सूरज से ज्यासती रोशनी गुरु का ज्ञान है, जो जैसे ही उसके अंदर ज्ञान गया तो अंधकार, जन्मों का अंधकार जो है वो चला गया।

बाहर की रोशनी तुमको तो रोशनी देगी लेकिन एक सूरदास को रोशनी नहीं देगी, सूरज एक सूरदास को रोशनी नहीं दे सकता है लेकिन गुरु सूरदास को भी रोशनी देता है।

सूरदास के भी अंदर घुसके जाता है। गुरु का अगर ज्ञान आकर कोई सूरदास लेवे तो उसको ज्ञान होएगा या नहीं होएगा? हो सकता है ना तो गुरु की रोशनी इतनी है। 100 सूरज से ज्यासती गुरु की रोशनी है ज्ञान की। ऐसी ज्ञान की रोशनी अर्जुन ने देखी। तुम बोलता है - भई 100 सुरज से ज्यासती रोशनी भई हमने तो कभी नहीं देखी है। हमने तो गुरु का ज्ञान भी सुना है हमने तो ऐसी रोशनी देखी नहीं है तो तुम ऐसा समझता है कि ऐसी रोशनी होएगी, बाहर से ऐसी चमकाहट होएगा तो तुमको भगवान का दर्शन होएगा यह ज्ञान की insight अंदर की रोशनी है। अंदर लाइट जगाओ। गुर ज्ञान का दीपक मन मंदिर में हर वक्त जलाना पड़ता है। यह गुरु के ज्ञान का दीपक अंदर में जलाओ। यही है ज्ञान की रोशनी और ज्ञान से ही तुम जहाँ तहाँ परमात्मा देखेगा। फूल में भी तू है तो कांटे में भी तू है इधर भी तू है तो उधर भी तू है जहाँ तहाँ भगवान ही भगवान है।

भगवान ने गीता में दसवें अध्याय में बोला है कि मेरी विभूति देखो। अर्जुन ने पूछा है - मैं कहाँ कहाँ तुमको देखूँ? तुम कैसा है किधर-किधर तुमको देखूँ? तो उसने क्या किया, बोलता है - तारों में चँद्रमा मैं हूँ, सुरज मैं हूँ, घोडों में जो अश्रावाकू घोड़ा हैं, फलाना ऐरावत हाथी है, बड़े में बड़ा हाथी मैं हूँ, घोड़ों में जो बड़े में बड़ा घोड़ा वो मैं हूँ, मगरमच्छ बड़ा मैं हूँ, इधर जो रोशनी है ज्यासती में ज्यासती रोशनी, जहाँ तुम देखो उधर मैं हूँ। पुरुषो में पुरुषोत्तम मैं हूँ। स्त्री में कीर्ति मैं हूँ। सरस्वती मैं हूँ सुंदरता मैं हूँ, जहाँ-जहाँ उसने बहुत ज्यासती कोई सुंदर बात देखी है जगत में तो बोला मैं हूँ। दरख़्त में पीपल का दरख़्त मैं हूँ। पर्वतों में सुमेरू पर्वत हिमालया जबल मैं हूँ। नदियों में गंगा मैं हूँ जो ज्यासती कुछ तिजले वाली चीज़ हैं उसमें बोला मैं हूँ। फिर बोला हे अर्जुन थोड़े में समझो कि जहाँ तहाँ मैं हूँ, सर्वभूतों में मैं ही हूँ।

पहले अच्छी-अच्छी बातें दिखाई उसको। भई इधर भी मैं हूँ, इधर भी मैं हूँ लेकिन पछाड़ी को बोला है कि सर्वत्र मैं ही तो हूँ तो किसी ने पूछा - भई भगवान जो है वो हमेशा अपने को इतना तेजस्वान क्यों दिखाया है? भई फलानी-फलानी चीज़ बड़ी-बड़ी चीज़ मैं हूँ तो इसी से एक दादा ने हमको इसी का जवाब दिया था - भई अर्जुन ने जभी कृष्ण से पूछा तो तुम्हारी विभूति कैसी है? कहाँ-कहाँ मैं तुम्हारे को देखूँ? तो उसने अच्छी-अच्छी चीज़ पहले दिखाया कि मैं हूँ क्योंकि सुंदरता की तरफ ज्यासती ध्यान जाता है।

कोई सुंदर स्त्री तुम देखो तो ज्यासती ध्यान जाएगा या काली कुरनी कोई देखेगा तो ध्यान जाएगा यह बडी सुंदर है तो तुम पीछे तक देखेगा वो बाज़ार में जाएगी ना पीछे तक स्त्री को देखेगा, फलानी बडी अच्छी स्त्री है इक इधर से गुज़र गई बहुत सुंदर थी तो तुम्हारा attraction जाता है ना सुंदरता में, तो बोलता है वो सुंदरता मैं हूँ। जैसे तुम कहाँ भी कोई सुंदर चीज़ देखो तो उसके ऊपर आशिक नहीं होना, बोलना इधर भगवान है। इसलिए भगवान ने बोला है - भई जहाँ तहाँ जहाँ तुम विभूति देखो बहुत सुंदरता, बहुत जो शक्तिशाली जिसको देखो, पुरष में पुरुषोत्तम मैं हूँ, ज्ञानियों में वाद मैं हूँ जो संवाद करते हैं ना, उधर मैं हूँ, सिमरन शक्ति मैं हूँ, ज्ञान की शक्ति मैं हूँ तो जो ज्यासती में ज्यासती बड़ी चीज़ है वो मैं हूँ। तो जैसे कोई लड़का लड़की से लव करता हैं ना पहले, तो उसको बड़ी-बड़ी अपनी बात सुनाता है। मेरे को कारखाना हैं, दो-चार मोटर है, मेरा बाप बहुत शाहूकार है, मेरा भाई बाहर अमेरिका में कमाई करता है, मेरा ऐसा है, मेरा ऐसा है जैसे वो लड़की फसके हमारी हो जाए।

जब शादी करके जाती है तो ठीकर-बित्तर भी नहीं है तो उसके पास। तो पहले उसको ऐसा अपना करने के लिए, उसको बोलता है यह इतनी इतनी चीज़ मेरी है। ऐसी तरह से भगवान ने भी अर्जुन को पहले अपने में टिकाने के लिए बोला है - यह सब मैं हूँ! सुंदरता सारी मेरी है! पीछे पछाड़ी को बोला है भई मैं ही तो हूँ जहाँ-तहाँ, सब जगह मैं हूँ। कोई ऐसी चीज़ नहीं है जहाँ मैं नहीं हूँ।

सब भूत प्राणियों में जो मेरे को देखता हैं और सब भूत प्राणी मुझमें देखता है और मेरे को सब भूत प्राणियों में देखता है वो ही सच देखता है। हे अर्जुन! ज्यासती जानने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है? ग्यारवे अध्याय में बोला हैं - ज्यासती जानने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है? थोड़े में ही समझो कि सर्व भूतों में मैं हूँ सारी सृष्टि मैं एक अंश में उठा के बैठा हूँ। एक अंश मात्र से सारी सृष्टि है। अंश मात्र माना सारी सृष्टि का मज़ा एक बूंद का है। एक अंश से सारी सृष्टि है। बाकी इतना सारा मैं हूँ माना ब्रह्मानंद जो है वो बड़े में बड़ा है लेकिन मनुष्य का आनंद जो संसार का आनंद है वो एक अंश मात्र है थोड़े में, इसका मतलब यही हैं भई जो भी संसार में हैं वो मेरे अंश मात्र है।

सारे संसार की सुंदरता, सारी माया की सुंदरता एक अंश मात्र है थोड़े में बूंद है लेकिन मैं तो इतना बड़ा सागर हूँ तो जो मेरा भक्त है, जो मेरी भक्ति करता है, जो मेरी शरण आता है जो मेरे को जानता है वो मेरे से मिलके एक हो जाता है और जो मेरी माया में जाता है वो तो जन्म-मरण के चक्र में आता है। तो मेरी माया के ऊपर मोहित नहीं हो जाओ लेकिन मेरे ऊपर मोहित हो जाओ क्योंकि माया जो सुंदर लगती है उसमे सुंदरता मैं हूँ तो अभी तुम बोलेगा कि यह बड़ी सुंदर है, यह साड़ी बड़ी सुंदर है, यह हीरा बड़ा सुंदर है, यह फलाना बड़ा सुंदर हैं। तुम बोलेगा यह बड़ा सुंदर है। अभी सुंदरता किसकी देखेगा जहाँ तहाँ भगवान की सुंदरता है तो तुम अपने ऊपर ही आशिक हो जाएगा। दूसरे किसी के ऊपर आशिक नहीं होएगा।

सब तैयारी हो गई। पेटी बिस्तरा यह वो सब कुछ हो गया बेचारी को, खाना-पीना, टिफन, बास्केट भी बन गया खाली नीचे टैक्सी आने की देरी थी वो 8 बजे ट्रेन भी है जब उतर रहे हैं तो एक माई आई और दादा को बोली - दादा क्यों जाते हैं? हमारी तो दिल नहीं होती हमको छोड़ के जाओ बॉम्बे से काहे के लिए जाता है? बोला - हाँ! तो बैठ भी सकता हूँ, ऐसी कौन सी बात है, हमको कोई इच्छा थोड़ी ना है इस बात की। एकदम हमको बोला की सब जो हैं अपना पेटी बिस्तरा खोलो, आज नहीं जाना है।

सब हैरान हो गए जिसको अंदर की इच्छा वो बोलता है - दादा ऐसा है, इतनी तैयारी हो गई, इतना यह हो गया आज तो चलता था फिर 15 दिनों में वापस आता था। क्या होता था चलने में और जिसको कोई इच्छा नहीं थी तो वह शांत बैठा था। बोला ठीक हैं गुरु बोलता है नहीं तो नहीं, yes तो yes और no तो no।

हम गए उधर नेपाल में, चार जने कठे नेपाल में गए और क्या किया उधर जिसका घर था, उसके घर में चल के रहा दादाजी और उधर सत्संग चला दो दिन सत्संग चला चौबीसों घंटा, उधर तीसरे दिन बोले अभी पेटी बनाओ, वापस चलता है बॉम्बे, अरे इतना नेपाल में आया है इतना काठमांडू शहर बहुत अच्छे में अच्छा, घूमे भी नहीं, देखे भी नही कोई शाप्ज़ नहीं देखा, कोई दुकान नहीं, कोई चीज़ नहीं देखा, कौन से शहर में आया है, विलायत जैसा शहर है, हवाई जहाज़ में गए थे। इतना भाड़ा करके दो दिन के बाद सत्संग करके, जिस माई को सत्संग सुनाने का था, उसको सुना के तीसरे दिन बोला चलो टैची बाँधो माना ज्ञानी देखो गया भी इधर से तो सारी दुनिया ने देखा नेपाल घूमता है ज्ञानी, क्या नहीं चाहिए ज्ञानी को तो सब घूमता है? और इंद्रियों पर control कितना है। उधर बैठ के भी उसी शहर में शहर नहीं देखा, बाज़ार नहीं देखा, कोई दुकान नहीं देखा, वापस हवाई जहाज़ में आकर इधर पहुंच गया। कहाँ माथेरान में किसी सीनरी को देखता था, सबको ले के चलता था। भई यह सीनरी है बहुत अच्छी, बिठाता था, पांच मिनट के बाद, बोलता था चलो आगे चलो आगे। अरे अभी ऐसे ही इतनी अच्छी सीनरी है, देखूँ तो सही, देखूँ तो सही। अरे अटको नहीं! चलो आगे। इस रास्ते पर हीरे की खाण, मोतियों की खाण, सोने की खाण, सब कुछ है लेकिन कहाँ अटक के बैठो नहीं एक जगह। आगे चलो फिर।

कहाँ भी फंसो नहीं - मैं इसके सिवाए नहीं रह सकती हूँ, मैं उसके सिवाय नहीं रह सकती हूँ, यह है अज्ञान। मैं सबके सिवाए रह सकती हूँ, मेरे को कुछ नहीं चाहिए। तीन लोक का राज़ उसी का सुख भी विष्ठा के समान है। मेरे को चाहिए कुछ नहीं। मैं अपने पांवों पर खड़ा हूँ।

शेर वह है जो अपने आधार पर खड़ा है, नहीं कि किसी दूसरे के आधार पर खड़ा है। माया से जो सुख लेता है वह कुत्ता है। दूसरे से जो सुख लेगा वो कुत्ते की तरह लेगा लेकिन फिर छोड़ने में बड़ी तकलीफ होएगी। टीवी देखा तो सही एक बार देखा फिर मन बोलेगा रोज़ देखो फिर मन बोलेगा रोज़ देखो, यह आदत का गुलाम। सिगरेट पीया, मन बोलेगा रोज़ पियो। सिनेमा गया मन बोलेगा रोज़ चलो। तो अज्ञानी जो सुख लेता है बस वो बोलता है रोज़ चलो। उधर ही जो मन है उसका फँस गया लेकिन ज्ञानी सुख लेते हुए भी ऐसा चलता है भई आगे बढ़ा कदम, रुकना तेरा काम नही, चलना तेरी शान। यह भी देखा-यह भी देखा, चलो आगे। जो भी माया उसके सामने आती है वो देख के फिर आगे चल जाता है। उसी से experience लेके फिर आगे चलता है।

माया है भी क्या - जैसे पत्थर होता हैं ना, उसकी खाल कैसी होती है, प्याज़ की खाल उतारो, उतारो, उतारो। अंदर कुछ नही है, ऐसी तरह से सारा सुख तुम लेके भी देखा है फिर एक सुख है, दो मिनट के लिए सुख है फिर क्या है फिर खाली, फिर खाली फिर बोलेगा मन और चाहिए और चाहिए कभी satisfy नहीं। मोटर तो चलाई है, आगे जल्दी चलो जल्दी चलो, हिसाब कहाँ हैं तुम्हारा? अभी हमको आड़े हैं, अभी हमने शादी किया, फिर बच्चा हुआ, फिर बच्चा बड़ा हुआ भई फिर बड़ा तो करेंगे। फिर उसको शादी तो करेंगे फिर पोता तो होएंगे, उसको संभालेंगे ऐसे तो मर जाएंगे, सारी उम्र तुम चलते चले आए, चलते चले आए कभी stop आई है।

कभी be still हुआ है। किस जन्म और किस उम्र में तुम be still होएंगा, वापस कभी आएंगा reback to God! भगवान से जो आगे तुम बढ़ गया है इतना, वापस भगवान के पास कब आएगा? अभी वापस आने का time है या टीवी देखने का टाइम है, एक टांग तो तुम्हारी मसाणे में पड़ी है। आधा तो पीर मर्द भी हो गया है, समझो बैठे, सारी दुनिया में सब कुछ तुमने देखा तो भी तृप्ति आई, शांति आई, तो जिस रास्ते पर शांति नहीं है, तो धिक्कार हैं उस कर्म को जिससे ना होवे शांत। धिक्कार है उस धर्म को जिससे ना होवे शांत।

जहाँ तुम गया है जिस रास्ते पर गया है तुमको शांति कहां है? वापस कब आएगा? जब देखता भी है मृगतृष्णा का जल है तो फिर थोड़ा लोटा तो भरके आए! थोड़ा जरूर सुख होएगा! थोड़ा तो मज़ा होएगा तो जाओ काला मुंह करो सब लोग, जा के देख के आओ, भई क्या है उधर सुख, कौन सा पानी है जो तुमको मिलेगा। जो इंद्रियों का सुख है जो मनुष्य आनंद है वो ज़ीरो है वो एक बूंद जैसा है। एक है ब्रह्म आनंद, एक है मनुष्य का आनंद जो तुमने अभी तक आनंद लिया है वो मनुष्य का आनंद लिया है। माना इंद्रियों का सुख जिसने तुमने बाहर इंद्रियों को भेजा है, बाहर से सुख लिया है वो है मनुष्य आनंद, एक ज़ीरो का, बूंद का लेकिन ब्रह्मानंद जो है वो है सागर जैसा, ज्ञानी को जो आंनद है वो अति इंद्रिय आनंद है जभी नौं दरवाजे बंद करेंगे तभी दसवां द्वार खुलेगा।

नौं इंद्रियों से जब तक तुम बाहर से सुख लेते हैं तब तक दसवां द्वार नहीं खुलेगा क्योंकि एक भी छेद अगर उसमें होएगा टायर में तो टायर पंचर हो जाएगा ना, चलेगा, एक छेद, इसी तरह से एक इच्छा, एक सूक्ष्म इच्छा भी होएगा तो एक भी इंद्रिय का रस होएगा - बात करने का, खाने का, पीने का, घूमने का, फिरने का, टीवी देखने का, यह भी इच्छा है, एक भी इच्छा होएगी तो भगवान का आनंद तुम नहीं माणेगा। अति इंद्रिय आनंद तुमको नही मिलेगा। ज्ञानी सहज-सहज खेल की तरह सब चलता है, देखता भी है, खाता भी है, पीता भी है, घूमता भी है लेकिन फिर भी बोलता है मेरा आनंद तो इससे ज्यासती है, मेरा आनंद तो इससे ज्यासती है। यह तो कुछ नहीं है सुख, यह बाहर का सुख तो zero है।

हमारा आंनद बहुत बड़ा है, कौन सी भी बात उसके life में आ जाए सुख की बहुत बड़ी लॉटरी लग गई है, भई उसको बेटा हुआ है, भई इसकी बीमारी उतर गई, भई इसको ऐसा-ऐसा सुख हुआ, कितना भी सुख ज्ञानी के लिए आता भी है तो बोलता है यह तो zero है, यह तो कुछ भी नहीं है यह अभी आया है, कल चला जाएगा। अभी बेटा हुआ तो कल मर जाएगा, अभी पैसा आया है तो कल चला जाएगा, खुट जाएगा।

कौन सी बड़ी बात है जिसमें ज्ञानी अटक जाए तो बड़ी बात हो गई, कोई भी दुनिया में सुख उसके लिए सुख नही हैं। सुख मांगत दुख आगे आवे, दुख ही दुख है सुख लेने में, सच्चा सुख है सुख देने में।

जब तुम सुख लेता है किधर से तो दुख भी तुम को ही मिलेगा तो सुख लियो नहीं लेकिन देने वाला बनो, सारी सृष्टि को दियो, दातार बनो। एक बारी तुम दातार बनेगा तो मज़ा आ जाएंगा, लेने वाला इधर मांगता है ऐसे करके मांगता है और देने वाला ऐसा करता है तो तुम देने वाला है तभी मज़ा है या लेने वाला हैं तभी मज़ा है। भगवान से भी तुम क्या लेता है, घर वालो से भी क्या लेता है, माया से भी तुमको क्या मिलेगा? कुछ भी नहीं मिलेगा, सब खुटेला आदमी है दुनिया में, क्या तुमको देगा? एक ही परमात्मा का आनंद जो है वो ब्रह्मानंद जो है वो ही सबसे उत्तम आनंद है। जो अति इंद्रिय आनंद है, इंद्रियों से ऊपर, इंद्रियों से परे, मन बुद्धि से मैं परे हूँ। मन से जो तुम आनंद लेता हैं मन की एकाग्रता से तुम्हारे को थोड़ा सा आनंद आता है, यह भी छोटा आनंद है। बुद्धि से भी जो आनंद आता है छोटा, इंद्रियों से जो आनंद आता है थोड़ा, लेकिन ये जो आनंद है वो आत्मा का आनंद है। आत्मा का आनंद जो है वो सदा ही है, एक रस है। कभी भी थोड़ा और कमती और ज्यासती नहीं होएंगा। आत्मा का आनंद कभी जाता नहीं है, कभी आता नहीं है। इंद्रियों का सुख आता है, फिर जाता है, एक दिन तुमको सुख मिला, तुम खुश हुआ। दूसरे दिन नहीं मिलेगा तो तुमको दुखी करना पड़ेगा अपने को, इच्छा नहीं पूरी हुई तो क्रोध, क्रोध नहीं पूरा हुआ तो फिर लोभ उधर होएंगा, फिर मोह भी उसी से है फिर अहंकार आएगा फिर बुद्धि भ्रष्ट।

गीता में दूसरे अध्याय में लिखा पड़ा है - भई बहुत बड़ा-बड़ा जो है सयाना आदमी भी इस इंद्रियों के सुख में बह गया। सयाना आदमी जो अपने को बोलता है कि मैं सयाना हूँ वो भी बह सकता है। इसीलिए हे अर्जुन! इस काम को तलवार से काटो। काम माना इच्छा, किसी भी बात की इच्छा तुम रखेगा तो तुम जीव बनेगा, जीव माना अंतःकरण। अतःकरण माना हमेशा खाली।

एक राजा गया, एक संत के पास कमंडल लेके गया। बोला यह भरो। संत क्या किया - उसमें छेद कर दिया, कमंडल में। कितना भी भरे तो फिर खाली हो जाए, कितना भी भरे फिर खाली हो जाए। राजा ने बोला - यह क्या? तुम कितना भी देता है तो यह खाली हो जाता है तो बोला यह है तुम्हारा अंतःकरण जीव का, जो तुम जीव है तो तुम्हारे पास अंतःकरण है - मन, बुद्धि, चित्त, अंहकार। जिसमें मन बुद्धि चित्त अहंकार है वो हमेशा खाली रहेगा। चाहे तुम उसी को कितना भी भरो, बोलो मैं इसको सुख देता हूँ। मैं इसको आनंद देता हूँ। मैं इसको शांति देता हूँ। बाहर के पदार्थों से इसको सुखी करता हूँ। एक विधवा है तुम उसको सिनेमा में लेके जाओ, टीवी दिखाओ, घुमाओ फिराओ, कुछ भी करेगा और भी विधवा की इच्छा बढ़ेगी। इच्छा कभी भी पूरी नहीं होएगी, पूरी करने से। इच्छा पूरी होती है वैराग्य से। नहीं इच्छा दबाने से पूरी होती है, नहीं इच्छा पूरी करने से पूरी होती है लेकिन इच्छा जाती है वैराग्य से।

राजा जनक पहले पहले गुरु से पूछा है कि भई गुरुजी मेरे को वैराग्य कैसे आए? दूसरा सवाल मेरे को ज्ञान कैसे लगे? और तीसरा सवाल मेरे को मुक्ति कैसे मिले? तीन सवाल पूछा था राजा जनक ने। तुमने कभी ऐसा सवाल पूछा है? तुम बोलेगा टीवी देखने में क्या है? यह तुम्हारा सवाल है। कभी बोला मैं मुक्त कैसे हो जाऊँ? मेरे को वैराग्य कैसे लगे टीवी से? दुनिया से वैराग्य कैसे आवे? यह तुम्हारा सवाल है जो मुक्ति के लायक है वो ऐसा सवाल पूछता है। जो अभी दुनिया के सुख में हैं वो बोलेगा टीवी देखने में क्या है? सिनेमा देखने में क्या है? इधर गया तो क्या हुआ इसको प्यार किया तो क्या हुआ इसमें अटक गया तो क्या हुआ? फिर आप ही फूटेगा ना। आज तो फंसूँ।

भई विषय विकार सब तुम ज़हर खाते हैं, विष खाके देखती हूँ, थोड़ा सा चाटती हूँ खाली खा के तो देखूँ। किधर ज्यासती नहीं। तो विष जब तुम थोड़ा सा चाटेगा तो किधर जाएगा? कौन सी नस में जाएगा, कौन सा भी दुनिया का सुख जो है वो विष समान है। राजा जनक को उसी को अष्टावक्र बोलता है - हे राजन! तुमको वैराग्य कैसे आएगा, विषय सब विक्ख समान त्याग।

पहले पहले गुरु बोलता है, शुरू करता है ज्ञान, सब विषय जो हैं इंद्रियों का, विक्ख समान तुमको लगता है, तुमको नफ़रत आती है कोई भी विषय विकार सामने आके तुमको रखता है, तुम्हारे मर्द सामने आता है, बेटा सामने आता है, धन सामने आता है, कई सुख सामने आता है, तुमको नफ़रत आती है उसी टाइम।

तुम समझते हैं यह विष या अमृत समान तुम पीते हैं। तुम अगर किसीको यह इंद्रियों का सुख देते भी हैं तो उसे विष पिलाते हैं, तृप्त करते हैं, औरत खुश होती है, तुम जाके खुश करता है उसी को। खुश नहीं करता है उसी को मगर ज़हर पिलाता है। अमृत तो केवल गुरु ही पिलाता है। यह ज्ञान का अमृत है। ज्ञानी अमर बनाता है। बाकी दुनिया में तुम कितना भी सुख किसी को दियो तो जैसी जेल में जाके आदमी कैदी को बहुत कुछ सुख दिया था। किसी ने पलंग बिछा कर दिया, किसी ने गेहूं दे दिया किसी ने कपड़ा बिछा दिया, किसी ने पैसा दिया, किसी ने कुछ दिया। लेकिन एक आदमी जेल का दरवाजा खोल कर आया। तुमको कौन सा पसंद है? दुनिया का आदमी बहुत सुख देता है बाहर का। मेरे ना मर्द ने हीरे का चूड़ा मेरे को दिया है। मेरे मर्द ने सोने का सेट दिया है। फलाने ऐसे किया है, मेरे को इधर ले के गया, सारी दुनिया मेरे को घुमाया है। बड़ा-बड़ा डाक्टर मेरे लिए ले के आता है मैं जब बीमार पड़ती हूँ, तो वह तो बहुत दुखी होता है मेरे लिए। भई उसका सच्चा प्यार है तो दुनिया में तुमने देखा है किसका सच्चा प्यार है? भगवान का सच्चा प्यार है या तुम्हारे मर्द का, बेटे का, उसका बहु का, किसका सच्चा प्यार है?

सब अपने-अपने सुख के लिए आया है दुनिया में, तुम अपना सुख देखो तो तुम्हारे सुख किधर है वो तो कहाँ भी है कैसे भी सुख में जाएं लेकिन तुमको किधर से सच्चा सुख मिलता है तुम अपने को देखो जो सच्चा सुख है वो है सत्संग में, यह सत्संग जैसा मज़ा कहाँ भी नहीं हैं। चाहे कितना भी दुनिया का भोग जाके मज़ा लियो लेकिन सत्संग जैसा, सत्संग माना सत्त आत्मा से जिसका कनेक्शन हो गया उसी को जितना आनंद है, उतना सारी दुनिया के राजा को भी आनंद नहीं है।

तुम ज्यासती में ज्यासती राजा बनेगा ना। महाराजा बनेगा, सारी सृष्टि का राजा बनेगा इतना सुख मिलेगा तो भी तुम शांत नही होएगा ना। तो यह सवाल पूछो वैराग्य कैसे आवे? वैराग्य से तुम्हारी इच्छा नष्ट होएगी। वैराग्य से तुम्हारे को अंदर का आनंद आएगा। पहले बार बार सूनी सूनी लाइफ देखने में आएगी भई यह भी छोड़ूँ, वह भी छोड़ूँ। यह भी इच्छा यह भी इच्छा, मगर तुम्हारा चेक हो जाएगा भई यह भी छोड़ूँ तो इस ज्ञान में बराबर परिश्रम करना पड़ता हैं पहले, जबर्दस्त मेहनत करके अपने मन और इंद्रियों को वश में करना पड़ता है, कितनी भी तकलीफ़ होवे लेकिन तुम सूअर जैसे जा के भोग भोगेगा उसी से अच्छा है तो Socrates जैसे रोना चाहिए तुमको।

एक Socrates था संत, हमेशा रोता था। सब आदमी पूछेगा कि तुम रोता क्यों है? बोला मैं भगवान के पाने के लिए रोता हूँ। भगवान को मैंने नहीं पाया है इसके लिए मैं बहुत रोता हूँ। बोला इतनी जवानी में तुम क्यों रोता है? चल के दुनिया के मज़े लो। बोला सूअर और सूअरी जैसा हम मज़ा नहीं लेगा। चाहे कितना भी सारी उम्र रोना पड़े। लेकिन हम मज़ा नहीं लेगा। हम Socrates जैसा रो-रो के मर जाएगा भगवान के लिए। लेकिन एक भी इंद्रिय रस बाहर से नहीं लेगा। तो उसने बोला सूअरी जैसे हम नहीं जाएगा बाहर। यह भगवान का भक्त कच्चा जो बोलता मैं वैराग्य में रहूंगा, परहेज़ में रहूंगा, सारी उम्र में अपने को संभाल कर चलूंगा, मैं सावधान होकर चलूंगा, किधर हमारा मन जाता है सारे दिन में। आत्मा में जाता है या किसी और मैं जाता है, किसी नाम रूप में।

मैं आत्मा हूं मेरा किसी भी नाम रूप से वास्ता ही नहीं है। Unconcerned कोई भी मेरे लिए कुछ नहीं है सारी दुनियां में। मैं अपनी आत्मा में स्थित हूँ। मैं अपने ब्रह्म में स्थित हूँ तो बोलता हैं सब विषय विष समान त्यागो और पीछे बोला यह यह गुण तो अपनाओ अपने में। बोला – सत्य, सरलता, क्षमा, आरजू माना सुधाई, धीरज यह जो 5 गुण है वह तुम धारण करो और यह जो सारी दुनिया का विषय विकार है वो विष समान पहले त्यागो।

सत्य में टिको सत्य माना आत्मा, आत्मा ही बोलो, आत्मा ही सुनो, आत्मा में रहो, आत्मा देखो, आत्मा सोचो, आत्मा का ही अनुभव करो चौबीसों घंटा। आत्मा तुमको इतनी प्रिय लगे, इतनी प्रिय लगे कि बाजू में कोई हज़ार सारे दुनिया का सुख रखा होवे उसी को तुम लात मारके भी बोलो - मेरी आत्मा सबसे अच्छी है।

मैं अपनी आत्मा पर आशिक हूं मैं दूसरे की आत्मा पर आशिक नहीं हूँ। आशिक होकर और पर तकलीफ उठाएं क्या जरूर, तुमको ही तकलीफ देखनी पड़ेगी अगर किसी नाम रूप के ऊपर आशिक हुआ बाहर किसी के ऊपर आशिक हुआ तो तुमको ही तकलीफ देखनी पड़ेगी लेकिन अपने ऊपर आशिक हो जाओ, मैं क्या नहीं हूँ? मैं सब कुछ हूँ! दूसरा कोई भी दुनिया में मेरे लिए सुंदर नही हैं, सुंदर में सुंदर मैं हीं आत्मा। कोई चीज़ नहीं हैं, कोई आदमी नहीं हैं, कोई औरत नहीं हैं ,सब जगह मैं ही तो हूँ। मेरे को कुछ भी अप्राप्त नहीं है। हे अर्जुन! मेरे को कुछ भी अप्राप्त नहीं है ,सब कुछ प्राप्त है। क्योंकि सब जगह मैं ही तो हूँ। और तुम समझता है तो मेरे को क्या बाकी प्राप्ति के लिए क्या चाहिए? बाहर से क्या चाहिए? जिसको आत्मा मिली भगवान मिला वो तृप्त हो गया अंदर ही। भगवान की दर्शन करने से ही तुम हमेशा के लिए तृप्त हो सकता है। चाहे भगवान तुमको ऐसे भी न करे।

एक उधर था लखनऊ में, एक आदमी रहता था, राजा था, उसने बोला तो मैं खाली गुरु का एक दिन दर्शन करूंगा। उसी दिन से हमेशा के लिए ब्रह्मचर्य में रहूंगा। मेरे को अब पक्का विश्वास है जिस दिन मैं गुरु का दर्शन करूंगा उस दिन से मेरी इंद्रियां शांत हो जाएगी और हुआ भी ऐसे। हम सब दादा लक्ष्मी हम सब गए लखनऊ जैसे ही ट्रेन से उतरे। उसने खाली दर्शन किया दूर से, बोला बस मैंने गुरु का दर्शन किया। उसी दिन से मरने तक एक बार भी उसको इच्छा नहीं हुई, उसकी स्त्री हैरान हो गई भई यह कैसी बात हो गई जिसको रोज़ यह बात कहती थी वो खाली गुरु का दर्शन करके शांत कैसे हो गया।

ONE TOUCH ONE GLANCE OF A TRUE GURU IS ENOUGH TO SHOW GOD. एक Glance, एक नज़र ही काफी है एक TOUCH काफी है । सिर पर हाथ रखे गुरु तो तुम्हारे सारे शरीर को शांत कर सकता है। तुमको धक्का खाने की जरूरत ही नहीं हैं, बाहर दुनिया में जाने की कहाँ भी, एक नज़र ही काफी हैं भगवान की। तुमको इतना विश्वास होना चाहिए, बोलता है सूक्ष्म इच्छा रह जाएगी, अंदर स्थूल इच्छा तो हमारी चली गई। अरे सूक्ष्म से सूक्ष्म भी भगवान ऐसा अंदर घुसके जाएगा तो सूक्ष्म क्या, स्थूल क्या कारण क्या, सब खल्लास हो जाएगा। चीनी शरीर खल्लास हो जाएगा एक सेकिंड में। करे मन अचाह स्वामी छजाऊं छिन्न में। एक क्षण में स्वामी बोलता है एक क्षण में गुरु ने मेरा मन अचाह करके रखा।

अचाह माना कोई चाहना नहीं। कोई इच्छा नहीं है मेरे गुरु में ऐसी शक्ति है - ऐसा जिसको ऐतबार है उसको करना कुछ नहीं पड़ता। सब हो जाता हैं खाली गुरु में विश्वास होवे, श्रद्धा होवे, प्रेम होवे, आगे बढ़ते चलो, बढ़ते चलो यही मेहनत है। श्रद्धा विश्वास प्रेम सत्संग चौबीसों घंटा यही काफी होवे। यही किताब, यही भजन, यही तुम्हारा टेप चले। सत्संग तुम्हारे को इसी आत्मा का, ऐसा ये घेरा करना चाहिए ये सत्संग का घेरा बनाना चाहिए जहाँ भी तुम बैठे हो। दूसरी कोई बात किया कोई चंचल बात किया, हँसी मजाक किया, तुम्हारा मन खराब हो जाएगा तुम बाहर गया, चंचलता किया मन खराब। जितना चाहिए उतना अंदर रखो जितना चाहिए उतना अंदर करो। "अंदर सतगुरा दा डेरा अंदर जोत जगदी।" तो यह बोला 5 गुण तुम अपने में रखो - एक सत्य एक सरलता।

सरलता माना सरल आदमी नहीं कोई होता है व्यवहार में। भई यह बहुत सरल है इसके अंदर भी जो सच्चाई है वो बाहर सच्चाई है। एक अंदर गुंडाताई रखेगा और बाहर से ऐसा-ऐसा करके मीठा चलता हैं व्यहवार में ढींगड़ी छींगड़ी, उसको ठगना उसको ऐसा करना, उसको झूठ बोलना, उसको सच बोलना यह सरलता नहीं हैं। ऐसी वजह से सरलता नहीं है। उसको भी ज्ञान नहीं लगता हैं अंदर उसके खराबी होती है।

मन जो है वह काला हो जाता है। सत्य, सरलता, आरजू माना सीधाई सादगी। सुधाई व्यवहार में सुधाई करें। सादगी धीरज क्षमा 5 गुण बोला। क्षमा का गुण जिज्ञासु को ज़रूर धारण करने का है माना दूसरे से मिला हुआ कष्ट, दूसरे से बहुत कष्ट तुमको मिला है लेकिन तुम उसको माफी दे दियो यह हैं क्षमा का गुण। कभी भी जिज्ञासु को किसी की शिकायत नहीं करनी चाहिए। इसने ऐसा किया, मेरी सास ऐसी है, मेरा बहु ऐसा है, मेरा बेटा ऐसा है, मेरा फलाना ऐसा है, किसी की भी जिज्ञासु को जो है वो शिकायत नहीं करनी। हमेशा बोले उसको माफी है।

Forgive them oh Lord forgive them oh Lord punish me for every fault, मेरे को भले punish करो लेकिन सबको forgive कर दियो। मतलब मेरी जो भूल होवे भले वो मेरे को भले punish करना मेरे को भले सज़ा देना लेकिन दूसरे को माफी देना जिसने मेरे से कुछ भी किया है। तुम जिसकी शिकायत करता है वो ज्ञानी है या अज्ञानी? पहले यह बताओ, अज्ञानी की शिकायत करेगा ना फलाना ऐसा करता है फलाना ऐसा करता है वो कौन है ज्ञानी है या अज्ञानी? जो अज्ञानी होगा वो जरूर ऐसा चलेगा ना, तुम बेवकूफ है अज्ञानी की बात करता है, मेरी फलानी ऐसी है, मेरी सास ऐसी है, मेरी बहु ऐसी है, अरे वो अज्ञानी है या ज्ञानी है।

ज्ञानी से तो कोई दोष होता ही नहीं हैं ज्ञानी से तो भूल होएगी ही नहीं। जरूर अज्ञानी से ही होएगी तुम अज्ञानी की बात कैसे करता है? बेवकूफ तो तुम है मूख जो मूर्खों की बात करता है। ज्ञानी समझ लेता है कि भाई जैसा जैसा जिसका स्वभाव है वह ऐसा ही चलेगा जितना जितना उसने अपने ऊपर किया है वह ऐसा ही स्वभाव उसका बना है जैसे जैसे संस्कार से वो आया है, संस्कार उसका नहीं मिटा है तो ऐसा ही चलेगा। ज्ञानी समझ लेता है भाई कैसा किसका स्वभाव है। ज्ञानी अपने स्वभाव पर चलता है। अज्ञानी अपने स्वभाव पर चलता है तो ज्ञानी को यह पता है तो मेरे को अपने स्वभाव को वश में करना है चाहे दूसरा करे या ना करे।

हर एक करे अपना आप उदार। हमको अपना उदार करने का है। अपने मन को रोकने का है। अपने इंद्रियों को वश में रखने का है।

अपनी आत्मा में अनुभव करनी है। भाई मैं आत्मा हूँ हमको अपना निश्चय करने का है भाई दूसरा ऐसा करता दूसरा ऐसा करता है, दूसरा को मन से निकालो पहले। भई other is hell दूसरा बोला माना नर्क शुरू हुआ तुम्हारे लिए। दूसरे से सुख लिया तो नर्क शुरू हुआ, उसी दिन से तुम्हारा अंदर ही काला हो जाएगा, साफ दिल नहीं होएगी। जब बाहर तुम दौड़ेगा अंदर काला। जब अंदर जाएगा तो अंदर सफाई होएगी, दिल की सफाई रखो, विषय विकार इच्छा-वासना, मोह-ममता क्रोध-काम, दुख-सुख इसमें जो समान रहता है वो ही सच्चा ज्ञानी हैंश वो ही सच्चा भगत है मेरा। गीता में लिखा पड़ा है - जो मन और इंद्रियों को control में करता है वो आत्मा में रहता है। बोलता है मन के रोकने के सिवाए देव दर्शन नहीं देता है और देव के दर्शन के सिवाए मन नहीं रूकता है, दोनो अरस-परस बात है। जब भगवान का दर्शन होएगा सामने तो तुम्हारा मन रुक जाएगा और जब तक मन को control नहीं किया तो भगवान का दर्शन भी नहीं होएगा।

गुरु अपना काम करे तुम अपना काम करो। सतगुरु तुम्हारा बँधन काटता है। "गुरु का सिक्ख विकार ते हाटे।" तुमको विकारों से हटना है। गुरु बोलता है - हट! गुरु बोलता है- चुप,शांत! स्टॉप कहे तो तुमको उसी वक्त स्टॉप करने का है। इसीलिए ही तो हम गुरु करते हैं। गुरु कैसी भी नहीं करने वाली बात भी करा देगा जो हमारा मन नहीं मानेगा ना गुरु के कहने पर जब हम चलेगा। श्रद्धा,विश्वास होएगा तो हम कैसे भी उसको मानेगा। मनाएगा मन को। जिसकी श्रद्धा विश्वास है बीस आना तो गुरु बोलेगा उठो तो उठो बैठो तो बैठो। अपनी मर्जी से एक कदम नहीं उठाता है, गुरु की मर्जी के सिवाए एक शब्द किसी से नहीं बोलता है। गुरु की मर्जी के सिवाए एक कदम नहीं उठाता हैं इतना control है। भई इससे क्यों बोला यह कौन है तुम्हारा? इसीसे उठा क्यों, बैठा क्यों, इसीसे गया क्यों, इसी से बोला क्यों, इसी को देखा क्यों?

सब इंद्रियों पर तुम्हारा control होना चाहिए ऐसा भी किसको क्यों किया? तुम्हारे में चंचलता नहीं होती है - एक दूसरे को जफ्फी मारना, एक दूसरे को ढक लगाना, किसी को यह करना, यह भी इंद्रियों की चंचलता है। रोकना बड़ा कठिन है, ढक लगाना तो आसान है, तो तुम्हारा हाथ बाहर तो बहुत जल्दी जाता है कभी ऐसा control किया है अपने पर तो यह भी इंद्रियों की चंचलता काहे के लिए। शांत मन थिर, इंद्रियां थिर, शरीर थिर, तभी आत्मा थिर होएगी। "थिर मन ब्रह्मा, अथिर मन संसार।"

जिसका थिर मन है मन कंट्रोल में है - ब्रह्म स्वरूप है। जिसका मन और इंद्रियाँ बाहर जाती हैं - चंचलता करती हैं वो कभी भी control मे नहीं आएगा। एक बारी बाहर गया तो अंदर नहीं आएगा इसलिए मेहनत कर करके तुमने जितना मन को control किया है, जितनी मेहनत की है वो उसी से आगे बढ़ो। फिर वापस माया में तुम जाएगा ये देखके आऊँ उसमे क्या है, ये देखके आऊँ, उसी में क्या है किसी से मिलके आया तो उसी से क्या हुआ, ऐसा किया तो क्या हुआ? मैं तो ज्ञानी हूँ मैं थोड़ी अभी गिरूँगा। मैं सिनेमा जाऊंगा तो गिरूंगा थोड़ी। किसी को टच करूंगा, गिरूंगा थोड़ी। इसके साथ घूमने गया तो गिरूंगा थोड़ी, इधर ही बंधज्ञानी हो जाओगे। अगर परहेज़ नहीं किया, वैराग्य नहीं लिया सारी उम्र, परहेज़ में नहीं रहा, असावधानी आ गई तो तुम गिर जाएगा। हज़ार साल तप करके भी एक ऋषि गिर गया।

एक पराशर ऋषि था। वह नदी के दूसरे किनारे जा रहा था। अचानक एक मोनी उसको नदी में लेकर गई नाव में। नाव में आधे रास्ते पर जाकर पराशर को इच्छा हुई। स्त्री को बोले मेरी जो है, उस लड़की को बोले - मेरी इच्छा पुरी करो। लड़की ने बोला - अभी सूरज देखने में आता है, भई इतना दिन है। बोला मैं ऐसा छूमंतर करूंगा तो दिन से रात हो जाएगी। करामात का धनी था पराशर ऋषि, दिन से रात हो गई फिर बोला समुंद्र देवता देखता है। बोला समुंद्र को मैं एक फूंक से सूखा सकता हूँ, वाड़ी हो गई। फिर बोला मैं तो मांछाणी हूं मेरे में बदबू आती है।

बोला मैं ऐसा छूमंतर करूंगा तू रानी बन जाएगी राजकुमारी। झट से वह राजकुमारी बन गई। लेकिन मेरी इच्छा पूरी करो तो माई ने लगा के लात गादड़ उठा कर ऐसा सर पर डाला तो लाली गाल, गाल ही लाल हो गया। उसका विवेक खुल गया, काक खुल गया कि तुम बदमाश आदमी, इतना तुम रिद्धि सिद्धि का मालिक होके एक इच्छा को नहीं रोक सकता है। ऐसी ऐसी बातें हमारे शास्त्रों में लिखी गईं हैं। भई इच्छा को रोकना ही बड़े में बड़ी बहादुरी है। इच्छा को भोगना तो बहादुरी नहीं है। भोगता तो कुत्ता भी है। भोगना बहादुरी नहीं है, रोकना बहादुरी है। इच्छा को जीतना बहादुरी है। वैराग्य से इच्छा को जीतो जितना वैराग्य लियो उतना अच्छा है। भई कितना वैराग्य लें, भई थोड़ा थोड़ा वैराग्य लो, ज्यासती वैराग्य लें। आखिर कितना वैराग्य लें? हमेशा के लिए वैराग्य होना चाहिए।

वैराग्य और अभ्यास यह दो पर है पखी का। अभ्यास है आत्मा का, वैराग्य है शरीर का। इस मूए शरीर को जितना सुख दिलाएगा उतनी इसकी गुलामी करना पड़ेगा। यह खिलाओ, यह पहनाओ इधर चलो, उधर चलो, सारा दिन तुमको ही गुलाम करेगा इस गुलामी से बचने का है, बंधन को छूटने का है। यह शरीर ही बंधन है शरीर ही बड़े में बड़ी माया है। यह मन ही बड़े में बड़ी माया है। मन की इच्छा ही बड़े में बड़ी माया है, जिसने अपने मन को अंदर देखा है, भई कितनी माया अंदर पड़ी है। कितना रस अंदर पड़ा है, कितना अंदर में इच्छा वासना पड़ी है, उसका ही दवाई करेगा। उसकी दवाई भगवान के पास है गुरु के पास है।

जैसे जैसे तुम आते जाते रहेंगे सत्संग, वाणी सुनेंगे वाणी की बरसात पड़ेगी तो अंदर ही अंदर सब विकार छट हो जाएंगे, खल्लास हो जाएंगे। ज्ञान की अग्नि इतनी जलाओ अंदर जो सब कर्म, सब पाप, सब वासनाएं, नष्ट हो जाएं इस ज्ञान की अग्नि में। ज्ञान अग्नि दग्धे कर्मा: ज्ञान की अग्नि जो है वही सब कर्मों को सभी पापों को नष्ट करती है। ज्ञान अग्नि है। ज्ञान तलवार है। ज्ञान ज्योति है। ज्ञान ही सुरमा है। ज्ञान ही नौका है, नाव है सब कुछ ज्ञान ही है। ज्ञान जैसी पवित्र वस्तु दूसरी कोई नहीं है।

ब्रह्मज्ञानी का भोजन ज्ञान, ब्रह्मज्ञानी की स्त्री ज्ञान। इतना उसका ज्ञान में दिल है जो सुंदर से सुंदर स्त्री उसके सामने बैठी हो वह देखेगा भी नहीं बोलेगा मेरा ज्ञान सबसे बड़ा है। अष्टावक्र गीता में लिखा पड़ा है - ज्ञानी के सामने एक जगह सुंदर स्त्री बैठी है, दूसरी तरफ मौत खड़ा है। उधर बहुत सुख उधर बहुत दुख। दोनों में वह एक समान है। अष्टावक्र बोलता है राजा जनक को भई ज्ञानी की स्थिति तुम ऐसे देखो, हजार स्त्रियां बैठी हैं एक तरफ। बहुत सुंदर सुंदर स्त्रियाँ बैठीं हैं। उसको थोड़ा भी चलायमान नहीं होता, थोड़ा भी चलायमान नहीं होता उसको देख के। और इस तरफ मौत का दुख है। भारी बीमारी, भारी दुख मौत है तो भी उसके अंदर में चलायमान नहीं होता उसका मन, भई मैं मर जाऊंगा। मेरे को बीमारी आ गई अभी क्या होएगा? अरे मैं सब सुख छोड़कर जाता हूं। पहले से ही छोड़ कर बैठा है।

सब स्वर्गों का सुख, देवताओं का सुख इंद्रलोक का सुख, ब्रह्मलोक इंद्रलोक चंद्रलोक बहुत लिखा पढ़ा है। वह सब सुख इधर ही है दुनिया का, इधर तोड़ के देखा, कुछ नहीं है, फेंको। एक तरफ तुम सारी दुनिया का सुख रखो और एक तरफ आत्मा का आनंद रखो। देखो तो ज्यासती कौन सा है भारी कौन सा है? वह सब हल्का है। फेंक देगा तुम यह सब हल्का सुख है। दुनिया में कोई भी ऐसी चीज़ नहीं है जिसके ऊपर हम मोहित हो जाएं। या मेरे को अप्राप्त है। जो मैं प्राप्ति के लिए जाऊं। सब कुछ मेरे को प्राप्त है। जिस टाइम गुरु मिला भगवान मिला माना प्राप्ति की भी प्राप्त हो गई। जो पहले से ही आत्मा प्राप्त था। नित आतम प्राप्त, आत्मा तो पहले से ही प्राप्त था। खाली गुरु मिलने से प्रतीति आई। पक्क हुआ, विश्वास आया, निर्णय हुआ, अनुभव हुआ कि बराबर मैं आत्मा हूँ।

पहले से ही तुम भगवान है पहले से ही तुम्हारे भीतर भगवान बैठा है। आनंद का स्रोत तुम है आनंद का सागर तुम है। आनंद का झरना तुम्हारे अंदर बहता है। तो तुम अंदर देखेगा और अंदर जाएगा और अंदर जाएगा तो मज़ा लेगा बाहर गया तो फिर अंदर की शांति चली गई। बाहर जाने से अशांति शुरू होएगी।

जिस दिन तुम एक सेकंड भी बाहर देखा, इधर सुख है, उधर दुख है, यह सुख है, यह सुख है तो अंदर की बत्ती उसी टाइम बुझ गई। यह गुरु ज्ञान का दीपक मन मंदिर में हर वक्त चलाना पड़ता है। जो अंदर है, वह दीपक जलता है। बाहर निकला दीपक बुझ गया। तो तुम्हारा सवाल खत्म हुआ तो यह देखने में क्या है वह देखने में क्या सारी दुनिया जाकर देखो। हमको कोई खराबी थोड़ी ना है कोई पूछता है मैं शादी करूँ? हम बोलते हैं जल्दी करो हम आइसक्रीम खाएगा। नर्क में तुम जाएगा हम थोड़ी ना जाएगा।

एक राजा था उसने बोला मैं शादी करूंगा। बोला ठीक है तो एक औरत को बोला भई तुम मेरे से शादी करो औरत ने बोला - शादी तो करूंगी, पीछे बच्चा भी होएगा, वह बोला - हाँ जरूर होएगा। उसे कौन पालेगा? बोला तुम नहीं पालना तो मैं आया रखके पालूंगा। तुमको तकलीफ नहीं दूंगा। बोला ठीक है जब मरेगा तो रोएगा कौन? पीछे रोना तो भाई तुमको ही पड़ेगा। दर्द तो तुम को सहना पड़ेगा। इसी तरह से गुरु बैठकर सुनाता है भई सुख तो तुमने लिया दुख कौन लेगा? वह भी तो तुमको ही लेना पड़ेगा ना। तुम तो समझता है खाली दुनिया में सुख ही सुख है। मैं सुख लेने जाता हूँ। ऐसा करूंगा फिर सुखी हो जाऊंगा। मेरे को ना एक औरत मिल जाए तो मैं सुखी हो जाऊंगा। मेरे को ना बच्चा मिल जाए एक तो मैं सुखी हो जाऊंगा। सब कुछ मिला भी तो राजा क्या सुखी हुआ?

सगल सृष्टि का राजा दुखिया। सारी दुनिया का एक ही राजा है तो भी दुखी है। हरि का नाम जपत हुई सुखिया। हरि का नाम कैच करो जपो तभी सुखी होएगा। परमात्मा में मज़ा है। परमात्मा में आनंद है। बाहर के सुख में आनंद नहीं है। शांति जो है वह अपना स्वरूप है। तुम्हारा ही स्वरूप है शांति स्वरूप तुम है। अशांति किस कारण आती है - इच्छा वासना डालो अंदर, आग लगाओ अपने को, जलो, पीछे बोलो मेरे को अशांति क्यों हुई है? भई कल तो मैं शांति में था आज आशांति कहां से आई? भई अग्नि जलाई होगी अंदर इच्छा और वासना की, तभी तो जला है।

अग्नि डाल के तुम जलता है पीछे बोलता है मेरे को शांति क्यों नहीं आती। फिर अग्नि वापस निकालो तो पानी का स्वभाव ठंडा है। फिर पानी ठंडा हो जाएगा इसी तरह से तुम इच्छा वासना छोड़ो तो अभी का अभी शीतल हो जाएगा शांत हो जाएगा जिस जीव को चाह नहीं सो शाहों का शाह। चाह चमारी चूहड़ी अति नीचन ते नीच। चाहना तुम पैदा करते हैं अंदर में तो नीचन ते नीच है चाहना। चूहड़ी है, चमारन है कभी छोड़ती नहीं है।चमाड़ माना चमड़ा जो लगता है ना तो छोड़ता नहीं है। ऐसी इच्छा है पूरी करो तो Much wants more पूरी करेगा तो दस इच्छाएं और उठेंगी। कभी तृप्ति नहीं आएगी। सच्चा सुख है सत्संग में। सच्चा सुख है आत्मा में और परमात्मा में। भगवान ही सच्चा सुख है बाकी किसी में भी सारी दुनिया घूम के आओ, टिकट देगा तुम सारी दुनिया भले घूम के आओ अमेरिका देखनी होवे लंदन देखनी होवे।

भई मेरे को एक इच्छा है मैं अमेरिका देखूं। भाई जाओ घूम के आओ। यह जो अमेरिका से आया है उसके मुंह पर कौन सी खुशी है? मुआ रोता है, पीटता है, खुशी कैसी? मेरा पैसा चला गया, मेरी औरत चली गई, मेरा फलाना चला गया, मेरे को ऐसा है, उधर काम करना पड़ता है, नौकर नहीं है सत्यानाशी है। सुबह से रात तक हम पकाते हैं, हम ऐसा करते हैं। उधर से जो आते हैं ऐसे घूं घूं करते हैं, शिकायत करते हैं। भई इंडिया में बड़ा मजा है। माई दाई तुमको मिलती है, उधर ना माई है ना दाई है। सब कुछ तुमको अपने आप से करना पड़ता है। उधर से दुखी होकर आता है फिर बोलता है अमेरिका जाऊंगा, बड़ा मजा आएगा। कहां भी सुख नहीं है। सुख है अपने आप में। सारी दुनिया घूम के आओ।

एक कौवा था जहाज पर बैठा। जहाज जो पानी का। जहाज से उड़ गया, बोला जाकर ज़रा मजा तो लेकर आऊं। एक ही जगह क्यों बैठूं। उड़ गया तो सारा आकाश उड़ के उड़ के थक गया तो अब बैठे कहां? वापस धक्का खा कर उसी जहाज पर आया। जब जहाज पर आया तभी शांतिपूर्ण भी लिया। भई इधर ही आराम है कितना भी उड़ा तो भी जहाज के अलावा कोई भी सहारा नहीं था।

उसी तरह परमात्मा के सिवाय कोई सहारा नहीं है। मन को भले उड़ाओ कितना भी उड़े धक्का खा कर। मेरी towel किधर है, मेरा रुमाल किधर है, मेरे साथ बैठो चाय पियो, कंपनी दियो, इकट्ठा चलो, सिनेमा में चलो, इधर चलो उधर चलो, कितना बारी तुम स्त्री में, बेटे में वासना रखता है। मौन है, शांति है तुमको घर में। तुम सेवा लेता है या सेवा करता है। शास्त्रों में लिखा पढ़ा है हरेक का घर में सेवा करना। तो अभी तक तुमने सेवा ली है या किसी की सेवा की भी है? एक बारी भी अगर किसी के नाम पर तुम बुलाते हैं, फलानी इधर आओ तो तुमने भगवान समझा? भगवान से तुम पानी लेगा? भगवान से तुम पानी लेगा? आज अगर हम तुम्हारे घर में आकर रहते हैं तो हम से पानी लेगा? हमको बोलेगा पानी भरकर के आओ?

तो सब में मेरे को देखो सब मैं ही तो हूं। तो कैसे तुमने रहरीत किया है? एक आदमी आया गुरु के पास। भई मैं आत्मा हूं यह मैंने समझा। मैं तो आत्मा हूं लेकिन घर में जाऊंगा, स्त्री को स्त्री, बेटे को बेटा, सेठ को सेठ, बच्चे को बच्चा समझेंगा ऐसा तो जरूर है, रहरीत तो जरूर करेगा ना व्यवहार में तो ऐसा करेगा ना। तो गुरु ने बोला, एक अज्ञानी आदमी जब घर जाता है तो क्या देखता है? एक आदमी, अज्ञानी आदमी घर जाएगा तो स्त्री को स्त्री, बेटे को बेटा, धन को धन ही समझेगा ना। तो ज्ञानी और अज्ञानी में क्या फर्क है दृष्टि में, बताओ? तुम ज्ञानी है, ज्ञान सुनकर यहां से जाता है।

ज्ञानी हुआ, सत्संगी हुआ। पहले तुम क्या करके देखता था, अब क्या करके देखता है। यह नजर का ऑपरेशन होता है इधर। मोतियाबिंद की बीमारी है तुम सबको। पर्दा आ गया है, आंख के आगे पर्दा आ गया है तो परमात्मा नजर नहीं आता है। तो गुरु आकर आंख का ऑपरेशन करता है। पहले तुम क्या देखता था और अभी क्या देखता है? अभी तुम घर में जाता है तो किसके घर में जाता है? अपने घर में जाता है कि गुरु के घर में जाता है? अरे भई तन, मन, धन सब गुरु का है तन मन वारूं गुरु को ना विसारूं। आज से मेरी यही है कि तन, मन, धन सब तुमको दिया। अब जब घर में जाएगा तो किस का समझेगा, कैसे जा के रहेगा? भगवान का समझेगा कि अभी समझा है?

समझेगा कि समझा है? सचमुच! सब भगवान का है? जब तुम घर में जाता है, अगर अज्ञानी होगा तो जरूर स्त्री को स्त्री करके देखेगा और बुलाएगा और सेवा भी लेगा उसी से, नहीं तो तुम शांत में रहेगा। दूसरा आकर तुम्हारी सेवा करे तो ठीक है। पानी गिलास देवे तो पियो नहीं तो अपना आप ही भर के पियो। तुमको कोई थाली आगे देवें तो प्रसाद खाओ नहीं तो उस दिन व्रत रखो जिस दिन तुम्हारी कोई सेवा नहीं करे। तुम सत्यनारायण का व्रत रखते हैं, ग्यास का व्रत रखते है ना, उसी दिन व्रत रखना जिस दिन तुम्हारी स्त्री खाना नहीं पकाए तुम्हारे लिए नहीं देवें, देखो तो वह दिन आता है कभी? लेकिन तुम मांगेगा, यह लाओ, वो लाओ, यह दियो। क्यों वह बहरा है क्या घर में? कैसे तुम रहरीत किया है सारी उम्र घर में स्त्री से, बच्चे से, नौकर से? कैसे तुम रहरीत करता है? नौकर में क्या देखता है?

भगवान नहीं है, बच्चे में भगवान नहीं है, स्त्री भगवान नहीं है? स्त्री को कितनी गाली देता है, कितना क्रोध करता है, कितना क्रोध किया है सारी उम्र। कैसे तुम चलते हैं दुनिया में हैवान की तरह। आज से तुम भगवान देखो जाकर। See God everywhere. जब है ही भगवान तो हम मांगे क्या, कौन सी सेवा लेवें, किस से सेवा लेवें, काय के लिए तुम सेवा लेता है किसी से? सेवा करने में कंजूस है। माना तुमको भी सेवा करने की है, सबको सेवा करने की है। तो ऐसा नहीं कि हम कमाते हैं, आते हैं घर में और स्त्री का काम है बैठना घर में भई तुम बैठी रहो मुझको चाय गरम दो।